# प्रश्न: बिहार में बाढ़ के कारण और परिणामों की विवेचना करें ।

## बाढ़ का अर्थ

- व्यापक भूमि क्षेत्र का कई दिनों तक पानी में डूबने / लगने को बाढ़ कहते हैं । यह आमतौर पर नदियों के साथ जुड़ा होता है क्योंकि नदी के किनारों से पानी की भारी मात्रा तटबंधों के ऊपर से होकर निकलता है ।
- अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ एक प्राकृतिक घटना है।
- बिहार भारत का सबसे अधिक बाढ़ प्रवण राज्य है, उत्तर बिहार में 76 प्रतिशत आबादी बाढ़ की हर साल होने वाले तबाही के खतरे में है।
- भारत के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रफल का 16.5% और आबादी का 22%, बाढ़ प्रभावित क्षेत्र बिहार में है ।
- बिहार का लगभग 73% भौगोलिक क्षेत्र बाढ़ प्रभावित है।
- 38 जिलों में से 28 में बाढ़ से संपत्ति, जान, खेत और बुनियादी ढांचे का भारी नुकसान होता है ।

## बिहार के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र

बिहार राज्य बाढ़ के लिए जाना जाता है। कुछ उच्च बाढ़ प्रवण क्षेत्र हैं जहां लगभग हर साल बाढ़ की समस्या उत्पन्न होती है। कभी-कभी बाढ़ का पानी दो बार या बरसात के मौसम में क्षेत्र में अतिक्रमण करता है। शेष बाढ़ प्रवण क्षेत्र साल में एक बार जरुर खतरे में होते हैं। गंगा, दियारा भूमि, उत्तर बिहार की नदियों के दो बाढ़ के तटबंधों, कोशी, गंडक, बूढ़ी गंडक, कमला, बागमती, सोन, पुनपुन नदी बेसिन में विद्यमान निचले इलाकों में बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रों में झीलें, चौरस, ताल, दलदली भूमि आदि हैं जहाँ बाढ़ का पानी महीनों तक बना रहता है। बाढ़ के कारणों में प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों कारकों की भूमिका शामिल है।

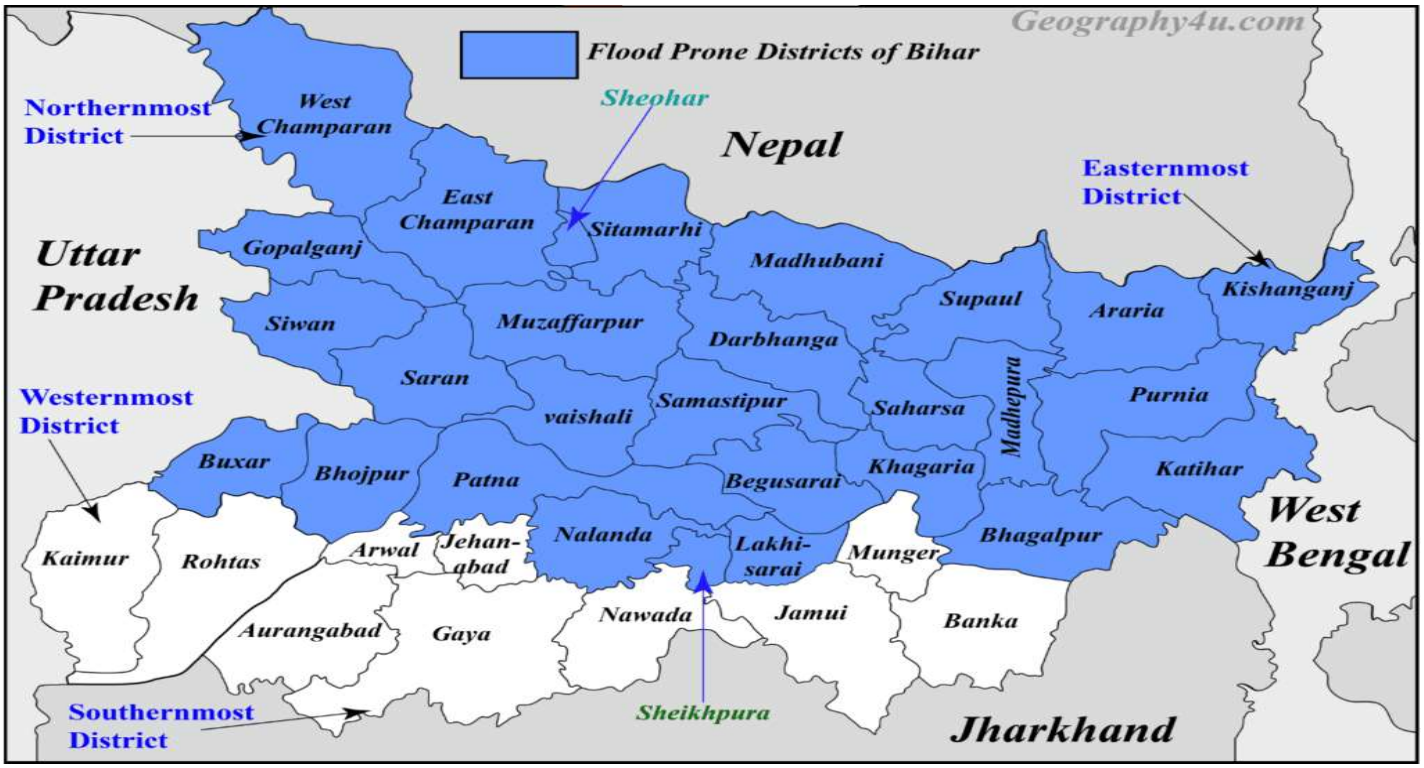


बिहार के बाढ़ प्रभावित जिले चित्र स्रोत: https://geography4u.com/floods-in-bihar-bpsc/

## बाढ़ के कारण

### प्राकृतिक और मानवजन्य

**प्राकृतिक कारण**

- निरंतरता में लंबी अवधि के लिए भारी वर्षा नदी बाढ़ का मुख्य कारण है
- शुष्क और अर्ध शुष्क क्षेत्रों में भारी वर्षा के कारण फ्लैश फ्लड भी होता है क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में खराब और प्राकृतिक जल निकासी व्यवस्था होती है
- वर्षा के तरीकों में बदलाव
- विस्तृत बाढ़ का मैदान
- तलछट के माध्यम से नदी के तल का ऊँचा होना
- नदी के पानी के मुक्त प्रवाह को अवरुद्ध करना
- प्राकृतिक घाटी और चैनल
- मैदानी क्षेत्र की मंद
- उत्तर बिहार के अधिकांश तालाबों के तल अवसादों से भर गए हैं ।
- नदी मार्गों का परिवर्तन

**मानव जन्य कारण**

- वनों की कटाई
- भवन निर्माण गतिविधियाँ और तीव्र व बेतरतीब शहरीकरण
- नदी के मार्गों में विभिन्न जोड़-तोड़ के द्वारा परिवर्तन करना
- पुलों, बैराज और जलाशय का तीव्र निर्माण
- आहर, पइन और अन्य जल निकायों को खेती योग्य भूमि में परिवर्तित कर दिया गया है
- उत्तर बिहार के अधिकांश टैंकों को भी खेती योग्य भूमि में बदल दिया गया है
- पक्का निर्माण जैसे कि सड़कें, कोर्टयार्ड आदि

## बिहार में बाढ़ का प्रभाव

बाढ़ के प्रभाव को मोटे तौर पर प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रभाव में विभाजित किया जा सकता है ।

- जल के संपर्क में जैसे जीवन, पशुधन और संपत्ति की हानि, सड़क, पुलों, रेलवे जैसी बुनियादी सुविधाओं को होने वाली क्षति, बिजली, टेलीफोन लाइनों, जल आपूर्ति लाइनों आदि में व्यवधान और बाढ़ के कारण होने वाले द्वितीयक प्रभाव, जैसे कि सेवाओं का विघटन, लंबे समय तक स्वास्थ्य और कुपोषण प्रभाव।
- जल आपूर्ति और सीवेज निपटान प्रणाली की विफलता
- परिवहन नेटवर्क में विफलता के कारण भोजन और अन्य आवश्यक चीजों की कमी

- क्षतिग्रस्त बुनियादी ढांचे से सेवाओं की विफलता के कारण क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियां भी खराब रूप से प्रभावित हैं
- यह आंशिक रूप से या पूरी तरह से उद्योगों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को बंद कर सकता है जिससे उत्पादन कम हो जाता है और इसके बाद आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- कुछ दीर्घकालिक प्रभाव हो सकते हैं जैसे बाढ़ से जमा अवसाद । यह कुछ वर्षों के लिए खेती योग्य भूमि, किसानों और मजदूरों को आर्थिक रूप से कमजोर कर सकती है।

लगभग हर साल बाढ़ से गंभीर रूप से नुकसान होता है । चल और अचल संपत्ति, खड़ी फसल और खाद्यान्न को नष्ट कर देता है जिससे बिहार में बुरी तरह से अपंगता आ जाती है। बाढ़ की घटनाओं के कारण होने वाले जीवन और अंग के नुकसान की भरपाई नहीं की जा सकती है।


- **सन्दर्भ:**
- बिहार: लैंड, पीपुल एंड इकॉनमी
- विभिन्न प्रतियोगी पुस्तकें एवं इन्टरनेट



बोलेन्द्र कुमार अगम, सहायक प्राध्यापक, भूगोल, राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान